mÙke Ik'kqikyu & xk;

xhj xk;%&

यह नस्ल गुजरात के गीर विस्तार एवं सौराष्ट्र के ग्रामीण इलाको में व राजस्थान के अजमेर,कोटा,बुंदी,पाली,बाडमेर ,व इलाकों में मुख्य रूप से पाई जाती है । इसका रंग लाल (सफेद धब्बों युक्त) या चॉकलेटी या सम्पूर्ण शरीर पर काले धब्बों युक्त हो सकता है।

आज हम देख रहे कि दिन प्रतिदिन दुध कि मांग बढ रही और पशु की संख्या और दुध कम होता जा रहा है । उसके कारण आज दुध का बाजार भी बढ गया है, इस समय में उन्नत पशुपालन के व्यवसाय से हम अच्छी खासी कमाई भी कर सकते है । वैसे देखे तो खेती और पशु पालन एक दूसरे के पूरक व्यवसाय है , पर आज सिर्फ खेती से गुजारा चलाना मुश्किल है , और पुशपालन में गाय का पालन कम खर्च में ज्यादा फायदा देने वाली बन सकती है , एवं थोडा तकनीकी ज्ञान के साथ गाय के पालन का व्यवसाय करे तो आज के समय मे जीवन निर्वाह के साथ अच्छा व्यवसाय हम कर सकते है , और इस बात में कम खर्च वाली छोटी – छोटी बातो को ध्यान मे रखते हुए हम कर सकते है ।

n/kk: uLy	Hkkjokgd uLy	f}i;kstuh; uLy
उच्च दुग्ध	कम दुग्ध	अच्छी दुग्ध
कम भारवाहक	उच्च भारवाहक	अच्छी भारवाहक क्षमता
गीर	नागौरी	हरियाणी
सवाल	मालवी	थरपाकर
राठी	राठ	कांकरेज
डियोनी	सिरी	मेवाती
लाल सिंधी	अमृत महल	ओंजल
	हालीकर	
	खिलारी	
	कंगायान	
	डॉगी	
	कृष्णा वेली	

xhj vkj n'kh xk; d mRikndrk e vUrj%&

vUrj dk vk/kkj	n'kh गाय	xhj गाय
प्रथम गर्भधारण उम्र	33-36 बाद	15 – 18 माह बाद
औसत बच्चे जीवनकाल	6	10
पुनः गर्भधारण हेतू समय	ब्याने के 120 – 150 दिन बाद	ब्याने के 60 से 90 दिन में
दूग्ध उत्पादन लगभग	4 ली / दिन	10 ली. / प्रतिदिन
व्यस्क मादा का वजन	290-320Kg.	350-380Kg
व्यस्क नर का वजन	470-510Kg.	530-550Kg

जन्म के समय वजन	25-45kg
वयस्क शरीर भार	350-380Kg
वयस्कता उम्र	36 माह
प्रथम गर्भधारण उम्र	30-32 माह
जीवनकाल	20-25 वर्ष
गर्भकाल	280-285 दिन
पुनः ताव का समय	60 से 90 दिन

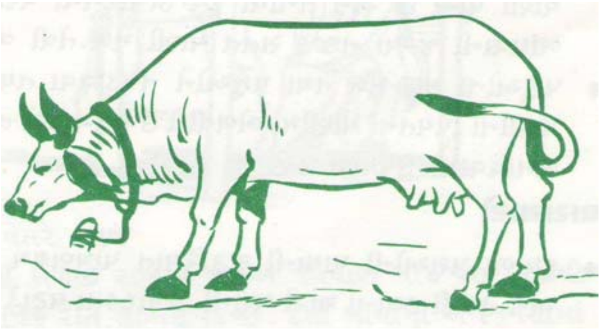

xk; dk p;u %&

यह दिखने में मध्यम आकार की,गठीले व आनुपातिक शरीर वाली व नम्र स्वभाव वाली नस्ल है । इसका सिर बडा,भारी व संकरा तथा ललाट उभरा हुआ है । इस नस्ल के कान लम्बे, लटके हुये व मुडी हुई पत्ती से मिलते–जुलते होते हैं । सींग मध्यम आकार के तथा पहले पीछे–नीचे की ओर तथा बाद में ऊपर आगे की ओर हो जाते हैं ।

1. अच्छी नस्ल वाली गाय होनी चाहिए ।
2. पहले या दूसरे बियात की
3. 1 से 2 महिने बियात वाली
4. अच्छा बडा थन और विकसित बडर
5. पेट के नीचे लम्बी दुध की नस होनी चाहिए ।
6. पतली और मुलायम चमडी ।
7. चोडाई वाली पीठ ।

d-l-	Yk{k.k	xhj
1.	दुग्ध उत्पादन क्षमता	अधिक
2.	शरीर	गठीला
3.	शरीर का आकार	त्रिकोणाकार
4.	शरीर का भार	अधिक
5.	स्वभाव	शांत व सुस्त
6.	अडर	सुविकसित, बडा व मुलायम

xk; dh n[kHkky ,oa vkokl %&

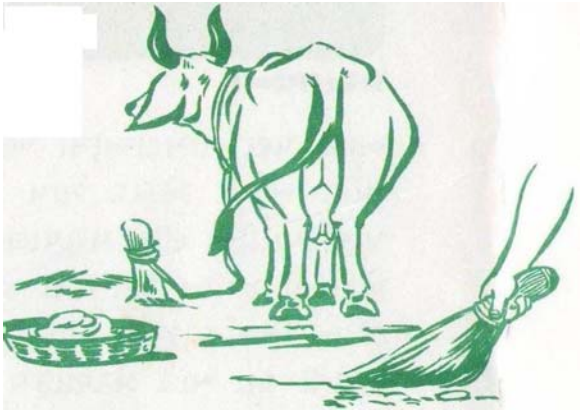

1 xk;	cUn txg (QhV) ^{2}	[kqyh txg (QhV) ^{2}	yEckbZ ukn (bap)
प्रथम गर्भधारण गाय	15-20	50-60	15-20
दुधारू गाय	20-30	80-100	20-24
ग्याभिन गाय	100-200	180-200	24-30

1. अच्छी हवा के आने जाने तथा उचित रोशनी के लिए जाली होनी चाहिए ताकि गाय को शुद्ध हवा मिले
2. हर पशु के लिए – 3 मीटर लम्बाई और 1.5 मीटर चोडाई वाली जगह होनी चाहिए । ताकि पशु आराम से उठ बैठ एवं खडा रह कर दाना पानी ले सके ।
3. आवास कि दिवार , नाद और गटर के ऊचाई वाले भाग गोल रखना होता है । ताकि दीवारो की किनारो से पशु को और नाद कि ऊचाई 1 मीटर तथा गहराई 25 – 30 सेमी दृ होनी चाहिए।
4. पशु के सपाट और बिना दरार वाला , 5 फिट लंबाई से 1 फिट का ढलान रखना ।पशु को बैठने तथा मालिक को सफाई करने में सुविधा रहती है।
5. पतरे के छपरे के ऊपर घास और पत्ते डालके रखना चाहिए । दिन मे 2 – 3 बार पानी छिडकना चाहिए ताकि गर्मी कम लगें ।
6. गाय के आवास को ठंड से बचाने के लिए दिवारे बंद होनी चाहिए ।
7. एक दूध देने वाली गाय को दिन मे 70 से 80 लीटर पानी दिन मे चार से पॉच बार एवं पोष्टिकता हेतु पानी के साथ 100ग्राम आटा 100ग्राम नमक अवश्य देना चाहिए ।

8. पशु के रहने की जगह को दिन में दो बार सुबह / शाम सफाई करनी चाहिए ।एवं राख का छिडकाव कर देना चाहिए ताकि किटाणु नही बनते

Pkkjk o nkuk %&

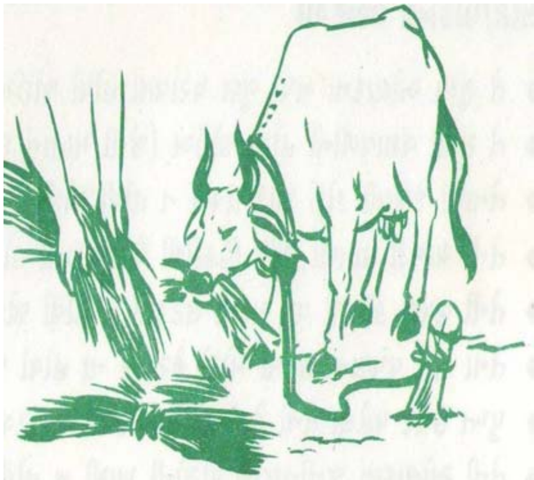

दुध देने वाली गाय को पोषणयुक्त चारा उसकी प्राथमिक आवश्यकता है । कम और अपोषणयुक्त चारा उत्पादकता को घटा सकता है । दुध के उत्पादन में 60 से 70 प्रतिशत खर्चा पशु के खुराक का होता है । ये खर्चा चारे के योग्य आयोजन से कम कर सकते है ।

1. पशु को हमेशा हरा चारा मिलता रहे ऐसा आयोजना करना ।
2. जब हरा चारा उपलब्ध नही है वहा साइलेज(चारे को हरी अवस्था में काटकर कम धुप में सुखाना) बना के भी कर सकते है ।
3. चारा कुट्टि करके व छोटे–छोटे टुकडे करके ही खिलाना चाहिए ताकि चारे का बिगाड न हो ।
4. चारा दिन मे दो तीन बार डालने की जगह थोडा–थोडा करके चार से पॉच बार डालना चाहिए ।ताकि चारे सद्उपयोग हो सके

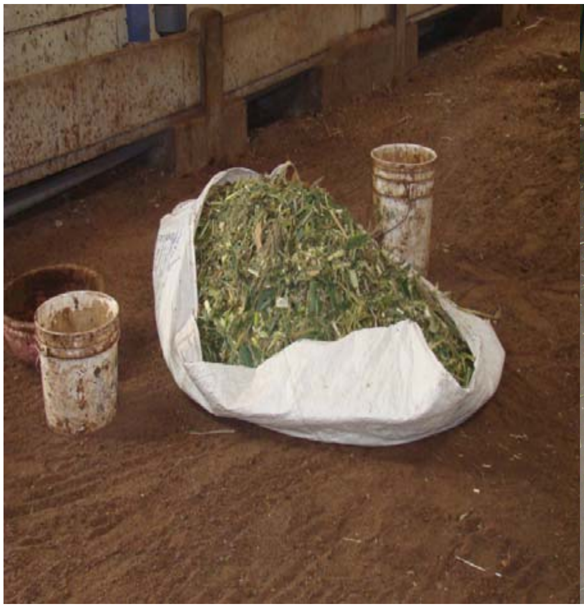

अनाज	मात्रा	मूल्य
जौ/ मक्का	350 ग्राम	3.85
मूंगफली खल	250 ग्राम	2.50
गेहूँ का चोकर	200 ग्राम	0.80
चना	150 ग्राम	3.00
नमक	30 ग्राम	0.30
खनिज लवण	20 गग्रम	0.60
कूल	1 किलो ग्राम	11.50

आहार की आवश्यकता (लगभग)

nkuk			Pkjk			
xk;	'kjhj dk fy,	n/k mRiknu dk fy,	gjk	l[kk	[kfutyo.k @ued ग्राम	dy ek=k kg/दिन
5-18 महीने	700 gm	-	6 kg	8 kg	30	14.730
प्रथम गर्भधारण्गाय	1 kg	-	10kg	6 kg	30	17.300
n/kk: गाय	1 kg	2/kg दुग्ध उत्पादन	12kg	5 kg	40	20.400
ग्याभिन गाय	1 kg	2kg/दिन	10kg	6 kg	40	19.400

lkekU;r% Qsyu okys jksx ,o fcekjh;k

jkx@fcekjh	dkj.k	y{k.k	bykt	cpko grq iwo rS;kjh
(खरवा रोग	बारिश में वायरस के कारण	जुगाली बंध तेज बुखार मुह खुर में छाले खाना पानी बंध	मुह में ग्लीसरिन लगाये मुह और खुर को लाल दवा के घोल से धोये	हर साल जुन एवं दिसम्बर में टिकाकरण करावे।
गलगोट	टास पास दुसित चारा दाना पानी से फेलता है।	तेज बुखार गले एवं बगले परौ के बीच सुजन लार गिरना एक दिन में मोत की सम्भावना	प्राथमिक उपचार असम्भव पशु चिकित्सक को बुलावे	मरे पशु को गाड देवे हर साल मई जुन में टिका
लंगडा बुखार	दुसित चारागाह मिटटी से पन पे बैक्टीरिया द्वारा	त्ेज बुखार कंधे गर्दन की मांस में सुजन से पशु लंगडाता है। खाना पानी जुगाली बंध	प्राथमिक उपचार असम्भव पशु चिकित्सक को बुलावे	मरे पशु को गाड देवे हर साल मई जुन में टिका
पशुमाता	छिचडे मक्खियॉ जुऐ एवं संक्रामक वायरस द्वारा	तेज बुखार , दस्त ऑख कान मुहॅ से स्त्राव	प्राथमिक उपचार असम्भव पशु चिकित्सक को बुलावे	समय पर टिकाकरण
गाय की चेचक	दुधारु गायो में वायरस द्वारा फेलता है।	हलका बुखार थनो पर दानेदार फफोल	प्राथमिक उपचार असम्भव पशु चिकित्सक को बुलाव	साफ हाथो से दुध दोहना समय को टिका करण हो
आफरा	सडा गला दाना घास तार चमडा आदि खाने से	पेट फुल जाता है। जुगाली बंध मुह से लार पशु हापता है।	जीभ के नीचे साफ लकडी रखकर ठीक से बांध देवे। सरसो का तेल =500ग्राम पानी 200ग्राम हींग 10ग्राम का घोल पिलावे	सडा गला दाना घास तार चमडा आदि खाने से बचाये
दस्त	पनी दाने में बार बार बदलाव जीवाणुओ से भी	पानी जेसे पतले बदबु दार दस्त	चावल का मांड पिलावे निलाथेता 1लिटर पानी में 5 ग्राम मिलाकर पिलावे	
थनेला	साफ पानी पिलावे गंदगी वाले स्थान पर पशु को बांधने गन्दे हाथो से दुध दोहने थनो पर घाव हाने से फेलता है।	गादी में सुजन दुध में कमी हल्का बुखार दुध दही जैसा फटा हुआ	प्राथमिक उपचार असम्भव पशु चिकित्सक को बुलावे	गाय को स्वच्छ जगह पर रखे दुधिया अपनी पूर्ण सफाई रखे।

Vhdkdj.k %&

टीकाकरण पषु के रोगो के बचाव एवं स्वास्थ्य को अच्छा रखने के लिए आवष्यक है। ताकि गंभीर/जान लेवा बीमारीयो से बचाया जा सके । एवं रोगो के इलाज के दोरान अतिरिक्त खर्चे को बचाये जा सके।

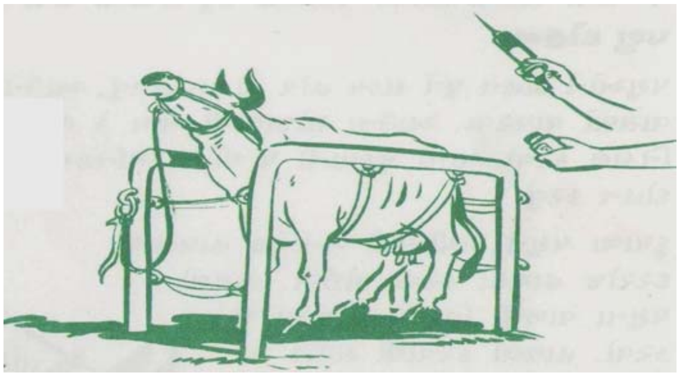

1- पशु को गलसुठा की रशी हर साल एक बार मई महिने मे देना ।
2- खरवा –मोवा की रशी साल मे दो बार और दिसम्बर में ।
3- फिवर (ताव–गाठियों) साल मे एक बार जून महीने मे रशी देनी होती है , और हर छः महीने पर डिवर्मिग करना जरूरी है ।ताकि पशु के पाचन क्षमता अच्छी रहे पेट के कीडे नही पडे

Vhd%&

cNMk e yxu okyk Vhd fuEu idkj g &

Vhdkdj.k d le; cNMk dh vk;q	Vhd dk idkj	Mkst	रोगो का बचाव	iqu% Vhdkdj.k
2 महीने से अधिक	Theileriasis vaccine	3 ml.	बछडो में होने वाला भयानक रोग से बचाव	हर साल
4 महीने	Foot & mouth disease Vaccine (Quadrivalent)	अलग–अलग, Booster 21 दिन बाद	बरसात में होने वाले खरवा रोग की रोकथाम हेतु	हर छः महीने
6 महीने	Anthrax spore Vaccine	1 ml.	जहरी बुखार कीरोकथाम के लिए	हर साल (बरसात से पहले)
6 महीने से अधिक	Hemorrhagic Septicemia Vaccine	1 ml.	गला गोटु राग की राकथाम	हर साल (बरसात से पहले)

6 महीने से अधिक	Black Quarter Vaccine	2ml.	काला बुखार जिसमें खुन काला झॉग दार हो जाता है। जिसके बचाव हेतु यह टिका आवश्यक है।	हर साल (बरसात से पहले व केवल 3 वर्ष तक)
6–9 महीने	Brucellosis C-9 Vaccine	5 ml.	मादा पशु में गर्भ पात रोग के बचाव हेतु ,एवं पशुओ से मनुष्य में भी फैल सकता है।	केवल मादा बछडा में
6–9 महीने	Rinderpest Vaccine	1 ml.	खुनी दस्त जैसे भयानक रोग के बचाव हेतु	हर 3 साल (नवम्बर या दिसम्बर में)

nk fCk;kr d chp dk le;%&

दो बियात के बीच का समय कम हो तो पशुपालक को आर्थिक फायदा होता है इस लिए पशु हीट मे आये तो उसकी सोकाचाई रखना, पशु को समय पर क्रॉस कराने की आदत डालनी चाहिए । बियात बाद पशु 60 से 90 दिन के बीच हीट में आये उस समय पर पशु को क्रॉस कराना आर्थिक लाभदायक है ।

1. गाय मे गर्भकाल 9 से 9.5 महीना योग्य हैं ।
2. गीर गाय 2 माह का सुखा समय छोडकर पूरा समय दुध देती है ।

ghV e vkus dk y{k.k %&

1. पशु बेचैनी या उश्केराट दर्शाता है ।
2. खाना कम कर देता है ।
3. दुध मे कमी आ जाती है ।
4. अन्य प्राणी पर कूदना ।
5. योनी मार्ग मे लालास दिखे ।
6. पशु आवाज करें ।
7. चिकनी एवं स्वच्छ पारदर्शक धार गिरे ।
8. हर बार थोडा–थोडा पेशाब करे ।
9. जब पशु हीट मे आते है, तब 10 से 12 घंटे के बीच में अच्छे तन्दूरस्त सांड एवं ए.आई. कराने व गर्भधारण कराने की सख्यता ज्यादा रहती है ।

उम्र (प्रथम गर्भधारण)	30-32 माह
वजन	350-380KG
मदकाल (ताव में)	15 – 18 माह बाद
गर्भकाल	280-285 दिन
पूनः ग्रर्भित करना (ब्याने के बाद)	60–90 दिन के अन्दर (जिससे सुखे समय को कम किया जा सकें)

d-l-	y{k.k	Early heat 0&8 ?kV	उचित समय 8&18 ?kV	Late heat 18&24 ?kV
1.	व्यवहार	गाय व्याकुल व झुण्ड से अलग हो जाती है।	गाय झुण्ड की अन्य गायों के साथ घूल मिलती जाती है ।	गाय झुण्ड में सामान्य व्यवहार करती है ।
2.	उत्तेजना	गाय उत्तेजित हो जामी है ।	अधिक उत्तेजना प्रदर्शित करती है ।	शांत हो जाती है ।
3.	भूख व खुराक	कम	और कम	सामान्य
4.	रम्भाना	कभी–कभी	अधिक	बहुत कम
5.	दूसरे पशु को चाटना	कभी–कभी	अधिक	बहुत कम
6.	दुग्ध उत्पादन	कम	और कम	बढना शुरू हो जाता है ।
7.	शरीर तापमान	थोडा ज्यादा	अधिक ज्यादा	सामान्य
8.	पेशाब	बार–बार	बार–बार	सामान्य
9.	दुसरे पशुओ पर चढना	बहुत कम	शुरूआत में अधिक	बहुत कम
10.	दुसरे पशुओ को चढने देना	कभी–कभी	सामान्यतः	बहुत कम
11.	भग	फूल जाती है तथा इसके गायब होने लगते हैं।	सुजन बढ जाती हैं ।	सुजन हो जाती हैं ।
12.	बालवा देना	पानी जैसे , साफ व गिरते समय टूट जाते हैं।	हल्के सफेद, गाढे धुंधले से तथा vulva से लटके रहते हैं व टूटते नहीं ।	बहुत कम समाप्त होना Vulva से mucous रहता हैं।
13.	गर्भाशय में तनाव	फूला हुआ व अधिक तना हुआ ।	अधिक फूला हुआ व तना हुआ	धीरे– धीरे हो जाता हैं ।
14.	योनि	गीली, हलकी लाल व फूली हुई । गीली, अधिक लाल व फूली हुई ।		सामान्य लगती है ।

I kM dk p;u %&

1. वह शुद्ध नस्ल का व सभी गुण वाला होना चाहिए ।
2. वह अच्छी वंशावली का होना चाहिए ।
3. उसकी चमडी पतली और कांध विकसित धारीदार रंग का होना चाहिए ।
4. उसका वृषण कोश ज्यादा लटकने वाला नही होना चाहिए ।
5. उसके दोनों वृषण कद मे छोटे बडे नही होना चाहिए ।
6. पुख्त उम्र से पहले उनका क्रॉसिंग में उपयोग न किया गया हो ।
7. उसकी नस्ल मे जननीय रोग की कमी नही होनी चाहिए ।
8. उसके पास से वार्षिक 100 से ज्यादा सेवायें नही ली होनी चाहिए ।

Ik'k| dk nkgu %&

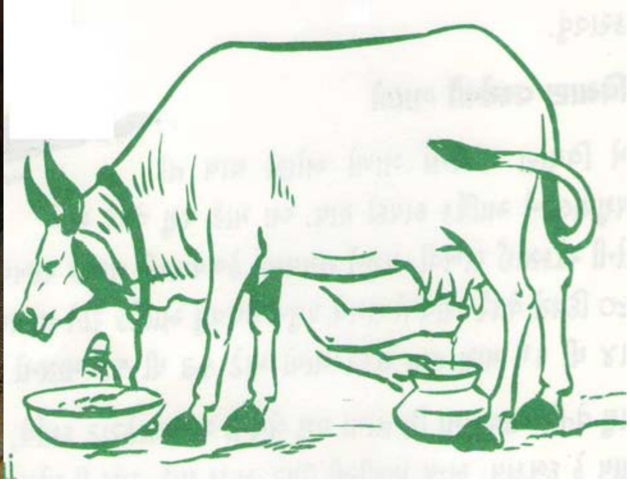

1. पशु को दोहन से पहले नहलाना और उसके थन को साफ पानी से धोना ।
2. स्वच्छ जन्तु रहित बरतन का उपयोग करना ।
3. थन के सुजा वाली गाय का दोहन बाद मे करे और उसका दुध निकालकर अलग कर देना ।
4. गाय को 8 से 10 मिनट के अन्दर पुरी जडप से दोहन कार्य पूर्ण कर लेना ।
5. दोहन का कार्य स्वच्छ जगह पर ही करना ।

vkHkkj

lk;kZoj.k f'k{k.k dsUnz]vgenkckn